

नियोबैंक

प्रलम्बिस के लयि:

नयोबैंक, पारंपरिक बैंक, आरबीआई, डजिटल बैंक

मेन्स के लयि:

भारत, बैंकगि कषेत्तर और एनबीएफसी के समावेशी वकिकास एवं वत्ततीय साकषरता के कषेत्तर में नई ऑनलाइन बैंकगि प्रणाली (नयोबैंक) की भूमकिका ।

चर्चा में क्यौं?

भारतीय रजिस्टर बैंक (RBI) नयोबैंक बज़िनेस मॉडल पर कड़ी नज़र रख रहा है, जहाँ फनितेक एक पारंपरिक बैंक के नेटवर्क से संबधति हो जाते हैं और ग्राहक उनमुख बैंकगि सेवा प्रदाता बन जाते हैं ।

- चत्ता की बात यह है कडिजिटल मॉडल व्यवसाय बहुत तेज़ी से बढ़ सकता है और ग्राहकों के मामले में अंतरनहिति बैंक से बढ़ा हो सकता है । यद्यपि नयोबैंक ग्राहक अंतरनहिति बैंक के खाताधारक बने रहते हैं, तो इन उपयोगकर्त्ताओं के लयि उपलब्ध एकमात्तर चैनल फनितेक के स्वामत्त्व वाला डजिटल प्लेटफॉर्म है ।

नियोबैंक (NEOBANK)

परिचय

- नियोबैंक एक तरह का डिजिटल बैंक है जिसकी कोई शाखा नहीं होती है। किसी विशिष्ट स्थान पर भौतिक रूप से उपस्थित होने के बजाय, नियोबैंकिंग पूरी तरह से ऑनलाइन है।
- ये परिचालन लागत को कम करते हुए ग्राहकों को व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करने हेतु प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हैं।
- नियोबैंक ने पारंपरिक बैंकों के जटिल बुनियादी ढाँचे और 'क्लाइंट ऑनबोर्डिंग' प्रक्रिया को चुनौती देते हुए 'चैलेंजर बैंक' के टैग के साथ वित्तीय प्रणाली में प्रवेश किया था।
- उदाहरण: रेजरपेक्स (RazorpayX), जुपिटर (Jupiter), नियो (Niyo), ओपन (Open) आदि।

विनियमन

- भारत में इन फर्मों के पास स्वयं का कोई बैंक लाइसेंस नहीं है, ये लाइसेंस प्राप्त सेवाएँ प्रदान करने के लिये बैंक भागीदारों पर निर्भर हैं।

आवश्यकता

- स्मार्टफोन उपलब्धता: वर्ष 2020 तक भारत में स्मार्टफोन के उपयोग की दर 54% थी, जो वर्ष 2040 तक 96% तक बढ़ने का अनुमान है। 80% आबादी के पास कम-से-कम एक बैंक खाता होने के बावजूद वित्तीय समावेशन के स्तर में अभी तक सुधार नहीं हुआ है।

डिजिटल बैंक बनाम नियोबैंक

- डिजिटल बैंक प्रायः बैंकिंग क्षेत्र में स्थापित और विनियमित विंडो आधारित ऑनलाइन कंपनी है।
- दूसरी ओर नियोबैंक, बिना किसी भौतिक शाखा के स्वतंत्र रूप से या पारंपरिक साझेदारी में पूरी तरह से ऑनलाइन रूप में मौजूद होता है।

चुनौतियाँ नियामक बाधाएँ, अवैयक्तिक, सीमित सेवाएँ, डेटा प्राइवैसी

लाभ कम लागत, सुविधाजनक, गति, पारदर्शिता, गहन अंतर्दृष्टि



नयोबैंक:

- नयोबैंक एक तरह का डिजिटल बैंक है जिसकी कोई शाखा नहीं है। किसी विशिष्ट स्थान पर भौतिक रूप से उपस्थिति होने के बजाय, नयोबैंकगि पूरी तरह से ऑनलाइन है।
- नयोबैंक वित्तीय संस्थान हैं जो ग्राहकों को पारंपरिक बैंकों का एक सस्ता विकल्प देते हैं।
- वे परचालन लागत को कम करते हुए ग्राहकों को व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करने के लिये प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का लाभ उठाते हैं।
- नयोबैंक ने 'चैलेंजर बैंक' के टैग के साथ वित्तीय प्रणाली में प्रवेश किया क्योंकि उन्होंने पारंपरिक बैंकों के जटिल बुनियादी ढाँचे और 'क्लाइंट ऑनबोर्डिंग' प्रक्रिया को चुनौती दी थी।
- भारत में इन फर्मों के पास स्वयं का कोई बैंक लाइसेंस नहीं है, ये लाइसेंस प्राप्त सेवाएँ प्रदान करने के लिये बैंक भागीदारों पर निर्भर हैं।
 - ऐसा इसलिए है क्योंकि RBI ने अभी तक बैंकों को 100% डिजिटल करने की अनुमति नहीं दी है।
 - RBI बैंकों की भौतिक उपस्थिति को प्राथमिकता देने के प्रति दृढ़ है और उसने डिजिटल बैंकगि सेवा प्रदाताओं के लिये कुछ भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता के बारे में भी बात की है।
- रेजरपेक्स, ज़ुपटिटर, नयो, ओपन आदि भारत के शीर्ष नयोबैंक के उदाहरण हैं।

नयोबैंक के विभिन्न ऑपरेटिंग मॉडल:

- गैर-लाइसेंस प्राप्त फिनिटेक (वित्तीय प्रौद्योगिकी) फर्म, पारंपरिक बैंकों के साथ मलिकर एक मोबाइल/वेब प्लेटफॉर्म और अपने सहयोगी बैंकों के उत्पादों के चारों ओर एक आवरण बनाए रखती हैं।
- पारंपरिक बैंक जो डिजिटल पहल कर रहे हैं।
- लाइसेंस प्राप्त नयोबैंक (आमतौर पर उन देशों में डिजिटल बैंकगि लाइसेंस के साथ जो इसे अनुमति देते हैं)।

पारंपरिक बैंकों और नयोबैंक के बीच अंतर:

- फंडिंग और ग्राहकों का भरोसा: नयोबैंक की तुलना में पारंपरिक बैंकों के कई फायदे हैं, जैसे कि फंडिंग और सबसे महत्वपूर्ण ग्राहकों का भरोसा।
 - हालाँकि वरिष्ठ प्रणालियाँ उनका महत्व कम कर रही हैं और उन्हें तकनीक-प्रेमी पीढ़ी की बढ़ती ज़रूरतों के अनुकूल होना मुश्किल लगता है।
- नवाचार: नयोबैंक के पास पारंपरिक बैंकों को उखाड़ फेंकने के लिये धन या ग्राहक आधार नहीं है, जबकि उनके पास नवाचार है।
 - वे पारंपरिक बैंकों की तुलना में अपने ग्राहकों को अधिक तेज़ी से सेवा देने के लिये सुविधाओं को लॉन्च कर सकते हैं और साझेदारी विकसित कर सकते हैं।
- पारंपरिक बैंकों द्वारा कम सेवा: नयोबैंक खुदरा ग्राहकों, छोटे और मध्यम व्यवसायों की आवश्यकता को पूरा करता है, आमतौर पर कार्य पारंपरिक बैंकों द्वारा कम किये जाते हैं।
 - वे अभिनव उत्पादों को पेश कर और बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करके खुद को अलग करने के लिये मोबाइल-फर्स्ट मॉडल का लाभ उठाते हैं।
- उद्यम पूंजी और नजी इक्विटी नविशक: वे ऐसे बैंकों के लिये बाज़ार के अवसरों पर गहरी नजर रख रहे हैं और उनमें अधिक दिलचस्पी ले रहे हैं।
- स्मार्टफोन का प्रभाव: वर्ष 2020 तक भारत में स्मार्टफोन प्रवेश दर 54% थी, जो वर्ष 2040 तक 96% तक बढ़ने का अनुमान है।
 - भले ही 80% आबादी की कम-से-कम एक बैंक खाते तक पहुँच है, लेकिन वित्तीय समावेशन के स्तर में अभी तक सुधार नहीं हुआ है।

नयोबैंक के समक्ष चुनौतियाँ:

- बाज़ार के एक खंड की ज़रूरतों को पूरा करना: उनकी सफलता की कुंजी बाज़ार के एक खंड की ज़रूरतों को पूरा करने और सही तकनीक, व्यापार रणनीति और कार्य संस्कृति को अपनाने में निहित है।
- नियामक बाधाएँ: चूँकि RBI ने अभी तक नयोबैंक को मान्यता नहीं दी है, इसलिए आधिकारिक तौर पर ग्राहकों के पास कोई कानूनी सहायता या किसी समस्या के मामले में परामर्श प्रक्रिया नहीं हो सकती है।
- अवैयक्तिक: चूँकि नयोबैंक्स की भौतिक शाखा नहीं होती है, इसलिए ग्राहकों की व्यक्तिगत सहायता तक पहुँच नहीं होती है।
- सीमिति सेवाएँ: नयोबैंक्स आमतौर पर पारंपरिक बैंकों की तुलना में कम सेवाएँ प्रदान करते हैं।

नयोबैंक के लाभ:

- कम लागत: कम नियम और क्रेडिट जोखिम की अनुपस्थिति नयोबैंक को अपनी लागत कम रखने की अनुमति देते हैं। बिना मासिक रखरखाव शुल्क के उत्पाद आमतौर पर सस्ते होते हैं।
- सुविधा: ये बैंक ग्राहकों को एक एप के माध्यम से अधिकांश (यदि सभी नहीं) बैंकगि सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- गति: नयोबैंक ग्राहकों को त्वरित खाता खोलने और अनुरोधों को तेज़ी से संसाधित करने की अनुमति देता है। वे ऋण की पेशकश करते हैं, ऋण के मूल्यांकन के लिये नवीन रणनीतियों में अधिक समय लेने वाली आवेदन प्रक्रियाओं को सीमिति करते हैं।
- पारदर्शिता: नयोबैंक पारदर्शी हैं तथा ग्राहकों पर लगाए गए किसी शुल्क और दंड की रीयल-टाइम सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्रदान करने का प्रयास करते हैं।
- गहरी अंतरदृष्टि: अधिकांश नयोबैंक अत्यधिक उन्नत इंटरफेस के साथ डैशबोर्ड समाधान प्रदान करते हैं और भुगतान, भुगतान योग्य और प्राप्य, बैंक स्टेटमेंट जैसी सेवाओं को अधिक सुलभ तरीके से प्रदान करते हैं।

डजिटल बैंक और नयिबैंक में अंतर:

- डजिटल बैंक और नयिबैंक एक समान बलिकूल नहीं हैं, भले ही वे प्रथम दृष्टया डजिटल ऑपरेटिंग मॉडल पर जोर देने पर आधारित प्रतीत होते हैं।
- जबकि कभी-कभी इन शब्दों का परस्पर उपयोग किया जाता है, डजिटल बैंक अक्सर बैंकिंग क्षेत्र में स्थापित और वनियमिती वडि आधारित ऑनलाइन कंपनी है, दूसरी ओर एक नयिबैंक, बिना किसी भौतिक शाखा के स्वतंत्र रूप से या पारंपरिक साझेदारी में पूरी तरह से ऑनलाइन रूप में मौजूद होता है।

आगे की राह

- नयिबैंकिंग वित्तीय समावेशन की चुनौतियों को हल करने और अन्य वित्तीय सेवाओं के साथ बैंकिंग सेवाओं को जोड़ने के लिये किये गए उपायों के वसितार हेतु कार्य कर सकती है, उदाहरण के लिये अप्रवासियों के लिये बैंक खाते खोलने जैसी सेवाएँ, पहचान के पारंपरिक दस्तावेजीकरण पर आधारित नई ऑनबोर्डिंग प्रक्रियाओं के माध्यम से सुविधा प्रदान करना। शुरुआत में छोटे लक्ष्यों के साथ समय पर और अधिक कार्यक्षमताओं एवं सेवाओं को जोड़कर नयिबैंक का वसितार हो सकता है।
- हालाँकि डजिटल और नयिबैंक गतिपकड़ रहे हैं, लेकिन अधिकांश ने अभी तक नरितर लाभप्रदता की स्थिति नहीं प्रदर्शित की है। इसके बावजूद उनके द्वारा बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में व्यवधान उत्पन्न करने की काफी संभावनाएँ हैं पारंपरिक बैंकों को और अधिक लाभदायक संस्था में परिवर्तित होने तथा आधुनिक समय की तकनीक में निवेश कर ग्राहकों को सहज और तीव्र ग्राहक सेवा प्रदान करने हेतु पुनः तकनीकी प्रक्रियाओं को अपनाना होगा।

स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया

PDF Reference URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/neobanks>

